आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 04-10-14

अपने ज्ञान से हम आत्माओं को रंक से राजा बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, "मीठे बच्चे - बाप की याद के साथ-साथ ज्ञान धन से भी सम्पन्न बनो, बुद्धि में सारा ज्ञान घूमता रहे तब अपार खुशी रहेगी. इस सृष्टि चक्र के ज्ञान से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे."

बाबा अभी हमें तीन मुख्य बातों का ज्ञान देते हैं - आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान.

इसमें आत्मा का और परमात्मा का ज्ञान उपयोग कर, हम आत्माये बाबा को याद करते है जिसे हम आत्माये पतित से पावन बनती हैं. यह भी हम जानते है कि पावन आत्माये ही अपने घर-परमधाम जा सकेगी. अभी पुरुषार्थ कर पावन बनी हुई आत्माये ही दिव्य-गुणों और शक्तिओ से भरपूर बनती हैं. फिर बाबा हमें सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान इसलिए देते है जिसे हम बाप से मिलने वाले वर्से को याद करें और स्वदर्शन चक्रधारी बने. जब हम बाप से मिलने वाले वर्से को याद करते है तो दिल में होता है की हमें लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना हैं तो फिर देवी-गुणों को भी धारण करना चाहिए.

अभी हम आत्माये बाप की याद से पतित से पावन बनने का और सृष्टि चक्र के ज्ञान से हम आत्माये देवी-गुणों को धारण करने का पुरुषार्थ करते हैं.

आज की मुरली से हम बाप की याद और वर्से के पाईन्टस को निकाल कर, दोनों को याद करने का पुरुषार्थ करेंगे.

बाबा की याद के कुछ पॉइन्टस -----

- रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों से पुछते है - रुहानी बच्चे याद की यात्रा में बैठे हुए हो? तुम्हें अन्दर में यह ज्ञान है कि हम आत्मायें याद की यात्रा पर हैं.
- बाप समझाते है जैसे भक्ति में हरिद्वार, अमरनाथ की यात्रा पर जाते हो. यहॉ फिर तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम जाते है शान्तिधाम.
- बाबा ने तुम्हारा हाथ पकड़ा है. बाबा अब तुम्हें पार ले जाते हैं इस विषय सागर से.

- अब तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो. अन्दर में है कि अब हम घर जा रहे हैं.

- मुख से कुछ भी बोलना नहीं हैं. अन्दर में सिर्फ याद रहे - बाबा आया हुआ है घर ले जाने के लिए. इस याद की यात्रा पर जरूर रहना हैं. इस याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे फिर बहुत ऊँची मंजिल पर पहुँचेंगे.

- बाबा कहते है - सदैव तुम्हारी बुद्धि में हो कि हम बाबा को याद करते जा रहे हैं. बाबा आते ही हैं हमें पतित से पावन बनाकर घर ले जाने.

- अब हमें निश्चय है कि हम आत्माओं को बाप को याद कर घर जाना हैं.

- हम आत्माये जानती है, हम आत्माओं का वह स्वीट घर है. बाबा को याद करते-करते हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना हैं. हम बाप कि याद में बैठते ही हैं इसलिए कि बाबा के साथ ही घर चले जायें.

<u>बर्से को याद करने के लिए कुछ पॉइन्टस</u> ----

- बाप आते ही है हम आत्माओं को पावन बनाने. हमें पावन बनकर फिर पावन दुनिया में जाना ही हैं.

- हमें यह ज्ञान है कि बाप हमें पावन बनाते है फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पावन दुनिया में आयेंगे.

- बाबा हमें रास्ता बताते है इस मृत्युलोक से निकल कर अमरलोक में जानेका. बाबा हमें अमरलोक के लायक भी बनाते हैं.

- बाबा ने हमें इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दिया हैं. बाबा कहते है - इस ज्ञान से हम चक्रवर्ती राजा बनते हैं.

- अब सारा ८४ जन्मो का चक्र हमारी बुद्धि में हैं. अब हमने यह चक्र पुरा किया. फिर हम घर जायेंगे फिर नयेसिर चक्र शुरू होगा.

- बाबा अब हमारे लिए नई दुनिया बना रहे हैं, जिसको अमरलोक कहा जाता हैं. वहॉ काल होता नहीं, इसलिए किसी की भी अकाले मृत्यु नहीं होगी. वहॉ रावण भी नहीं होता, इसलिए हम सदा निर्विकारी होकर रहेंगे.

इस तरह से हर मुरली से हमें बाप कि याद और वर्से के पॉइन्टस निकाल कर याद की यात्रा पर रहना ही हैं. ॐ शांति. Feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com.